UP LT Grade 2025

प्रगति Batch

शम्पीटर के लाभ सिद्वान्त

Khan Sir

1- अर्थशास्त्र की प्रकृतिः- अर्थशास्त्र की परिभाषा, चुनाव की समस्या, व्यवस्था एवं समष्टि विश्लेषण, स्थैतिक एवं व्यावहारिक अध्ययन की विधियां, संतुलन का विचार।

2- उपभोक्ता व्यवहार एवं मांग विश्लेषणः- उपभोक्ता का संतुलन, मार्शल का दृष्टिकोण, अनधिमान वक्र विश्लेषण (कीमत, आय तथा प्रतिस्थापन प्रभाव), मांग का नियम, मांग व पूर्ति की लोच, प्रकार एवं माप, उपभोक्ता अतिरेक ।

3- उत्पादन एवं जनसंख्या के सिद्धान्तः- उत्पादक का संतुलन, उत्पादन के नियम परिवर्तनशील अनुपात का नियम एवं पैमाना के प्रतिफल के नियम, लागत एवं आगम वक्रों का विश्लेषण, जनसंख्या के सिद्वान्त, माल्थस, अनुकूलतम जनसंख्या एवं जनांककीय संक्रमण सिद्वान्त।

4- बाजार की प्रकृति एवं विभिन्न बाजारों में कीमत निर्धारणः- पूर्ण प्रतियोगिता, अपूर्ण एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता, एकाधिकार।

5- वितरण के सिद्वांत- वितरण का सीमांत उत्पादकता सिद्धांत, पूर्ण एवं पूर्ण प्रतियोगिता में मज़दूरी दर का निर्धारण, प्रतिष्ठित एवं किन्स का व्याज सिद्वान्त, नाइट, जे0के0 मेहता, शम्पीटर के लाभ सिदवान्त।

6- मुद्रा, बैंकिग तथा मुद्रा स्फीति एवं मौद्रिक नीतिः मुद्रा का मूल्य स्थान - फिशर एवं कैम्ब्रिज व्यू, केन्स का बचत निवेश सिद्धान्त, केन्द्रीय बैंक के कार्य, व्यापारिक बैंको के कार्य, साख सृजन एवं नियंत्रण, मुद्रा पूर्ति की अवधारणा, मुद्रा-स्फीति की अवधारणाएं- प्रकार, नियंत्रण एवं नीति ।

श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)

श्रम की पूर्त्ति से मतलब है कि *एक निश्चित मजदूरी दर पर श्रमिक कितने घंटे काम करने को तैयार है।*

1. मजदूरी और श्रम-पूर्ति का संबंध

जब मजदूरी बढ़ती है: ज्यादा मजदूर काम करना चाहेंगे
मजदूर अधिक समय (अधिक घंटे) काम करने की कोशिश करेंगे
इसलिए सामान्यतः मजदूरी और श्रम-पूर्ति का संबंध **प्रत्यक्ष** (Direct) होता है।
अर्थात:

उच्च मजदूरी ⇒ अधिक श्रम-पूर्ति

इसका परिणाम यह होता है कि श्रम-पूर्ति का वक्र नीचे से ऊपर की ओर जाता है।

श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)

2. मजदूरी बदलने पर दो तरह के प्रभाव पड़ते हैं

(A) प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect)- सदैव धनात्मक (Positive)

मजदूरी बढ़ती है → काम ज्यादा लाभदायक लगता है
मजदूर **आराम** (leisure) को कम करके **काम** को बढ़ाते हैं
यानी आराम के घंटे "काम" से प्रतिस्थापित हो जाते हैं
इससे श्रम-पूर्ति बढ़ती है।

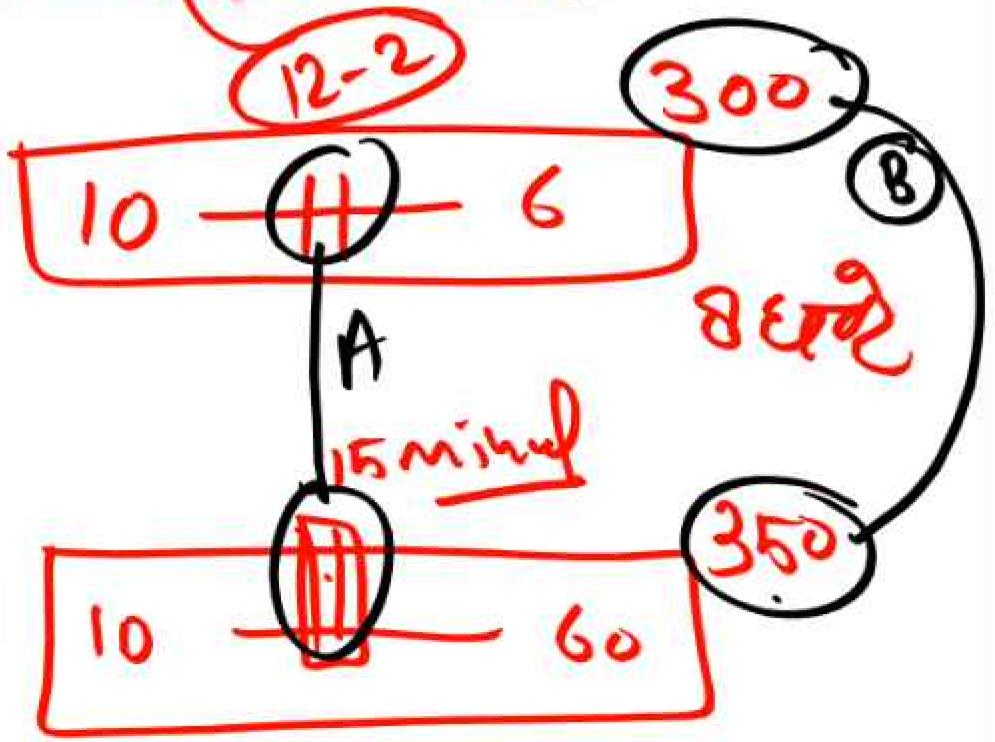

(B) आय प्रभाव (Income Effect)- ऋणात्मक (Negative)

मजदूरी बढ़ने से मजदूर की आय बढ़ जाती है
अब वह अधिक आराम पसंद कर सकता है
इसलिए मजदूर **काम के घंटे घटाकर आराम** बढ़ा सकता है
इससे श्रम-पूर्ति घटती है।

श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)

3. वास्तविक श्रम-पूर्ति किस पर निर्भर करती है?

वास्तविक (Actual) श्रम-पूर्ति जानने के लिए देखना पड़ता है कि:

•कौन-सा प्रभाव अधिक बड़ा है?

- यदि **प्रतिस्थापन प्रभाव > आय प्रभाव** → श्रम-पूर्ति बढ़ेगी
- यदि **आय प्रभाव > प्रतिस्थापन प्रभाव** → श्रम-पूर्ति घटेगी

कम मजदूरी पर सामान्यतः प्रतिस्थापन प्रभाव अधिक होता है।
उच्च मजदूरी पर आय प्रभाव अधिक हो सकता है।

① 2 घंटे Rest, wage - 300 ⇒ 10 घंटे - 350   325 - 7

② ₹350 - 8 घंटे - 300 - 6 घंटे

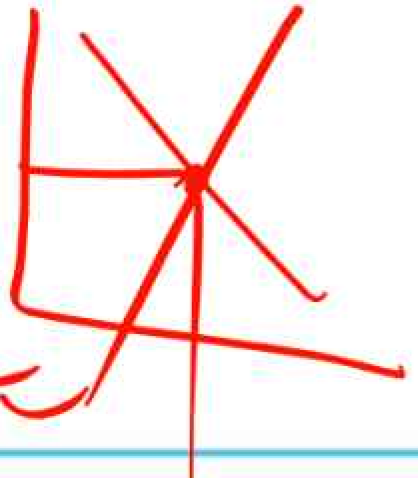

श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)

4. पीछे मुड़ने वाला श्रम-पूर्ति वक्र
(Backward Bending Labour Supply Curve)

एक सीमा तक मजदूरी बढ़ने पर श्रम-पूर्ति बढ़ती है पर ज़ब मजदूरी बहुत अधिक हो जाती है,
आय प्रभाव बढ़ जाता है और श्रम-पूर्ति **घटने लगती है**
इससे वक्र एक बिंदु के बाद पीछे की ओर झुक जाता है।
यही कारण है कि:

कम मजदूरी → श्रम-पूर्ति बढ़ती है
बहुत अधिक मजदूरी → श्रम-पूर्ति घट सकती है

300 — 8
325 → 9
350 → 10
400 → 9

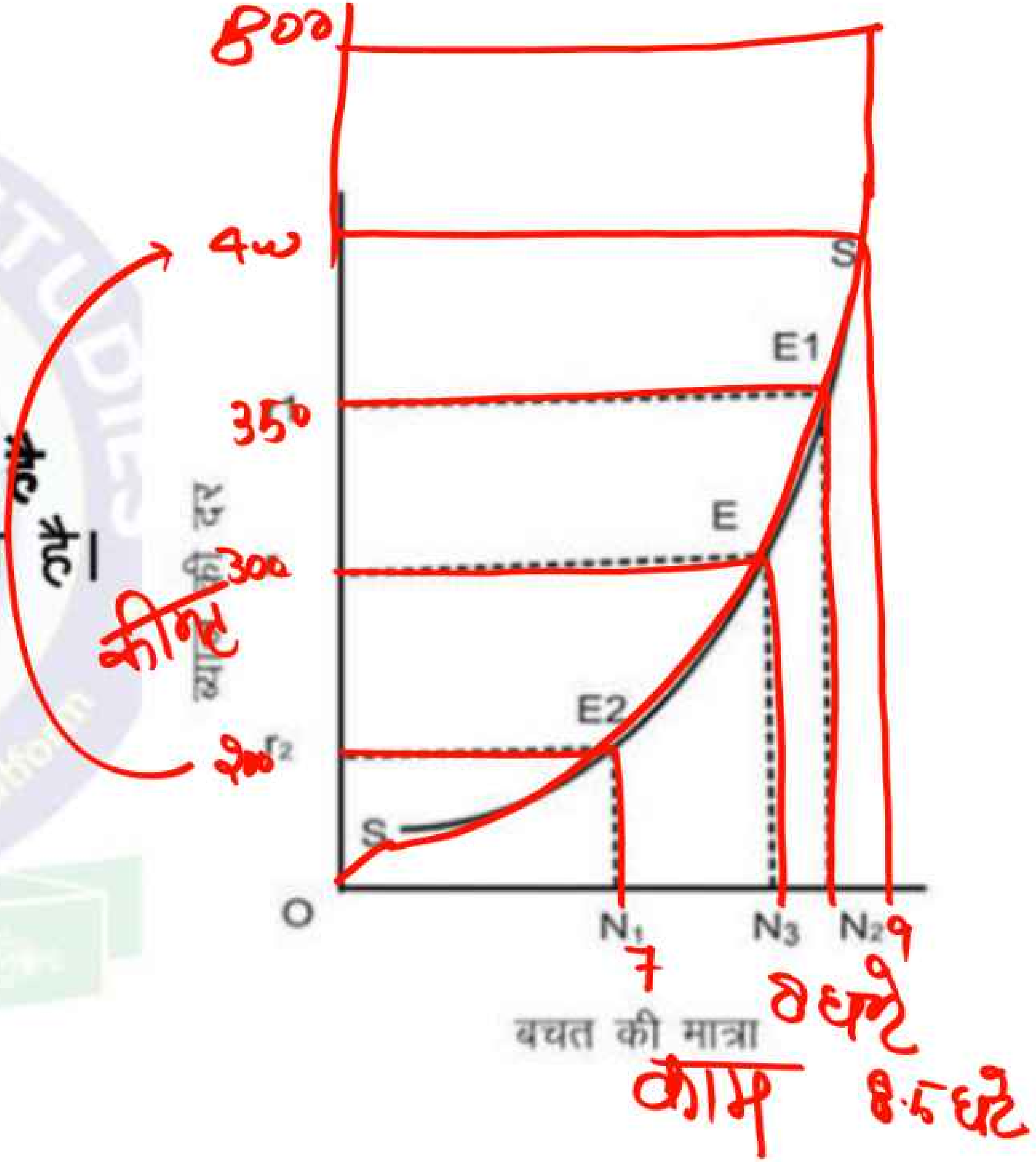

श्रम की माँग (Demand of Labour)

श्रम की माँग **उदयमियों** **(Producers)** द्वारा की जाती है।
क्योंकि उद्यमी ही श्रमिकों को काम पर रखते हैं ताकि वस्तुओं का उत्पादन कर सकें।

1. श्रम की माँग किस पर निर्भर करती है?

श्रम की माँग उस *वस्तु की माँग* पर निर्भर करती है
जिसके उत्पादन में उस श्रम का उपयोग होता है।

मतलब:

•जिस वस्तु की बाजार में अधिक माँग होगी → उस वस्तु को बनाने के लिए अधिक श्रमिक चाहिए होंगे →
श्रम की माँग बढ़ जाएगी

2. श्रम की माँग = व्युत्पन्न (Derived) माँग

श्रम की माँग सीधे नहीं होती।
यह वस्तु की माँग से “उत्पन्न” होती है।
इसलिए इसे **Derived Demand** कहते हैं।

KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

श्रम की माँग (Demand of Labour)

3. श्रम की माँग का आधार – सीमांत राजस्व उत्पाद (MRP)

उद्यमी यह देखता है कि:

"आखिरी लगाए गए श्रमिक से मुझे कितना अतिरिक्त उत्पादन और अतिरिक्त आय (Revenue) मिल रही है?"

इसी अतिरिक्त आय को **सीमांत राजस्व उत्पाद** (**Marginal Revenue Product – MRP**) कहते हैं।

और **श्रम की माँग का वक्र** (**Demand Curve**) **= MRP का वक्र**

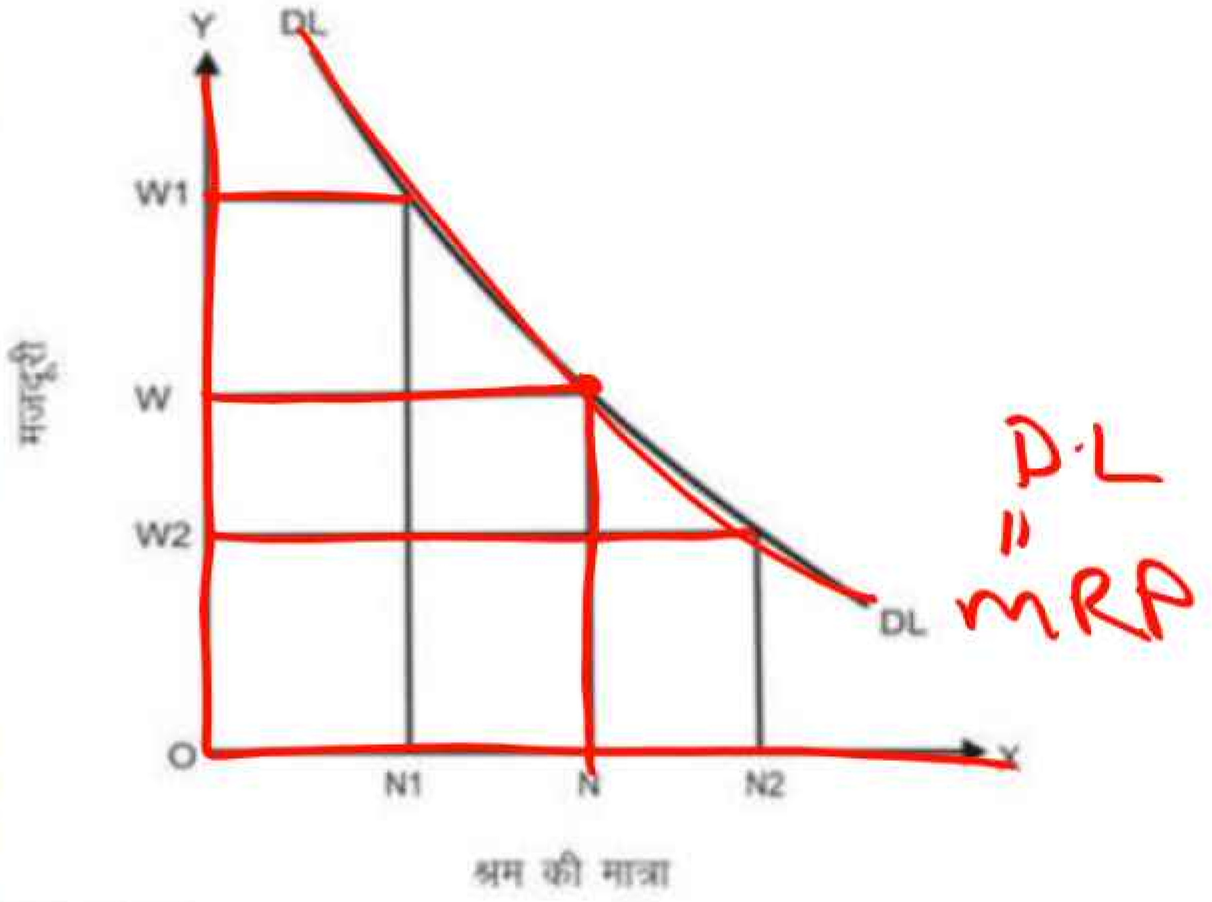

श्रम की माँग (Demand of Labour)

4. घटता हुआ MRP — क्यों?

उत्पादन में "उत्पादन ह्रास का नियम" (Law of Diminishing Returns) लागू होता है।
यानी: जैसे-जैसे अधिक श्रमिक लगाए जाते हैं,
हर नए श्रमिक से मिलने वाला **अतिरिक्त उत्पादन कम होता जाता है**
इसके कारण:
MRP घटता जाता है
इसलिए श्रम की माँग वक्र **नीचे की ओर ढलता हुआ** होता है
इसे **DL DL** वक्र से दिखाया गया है।

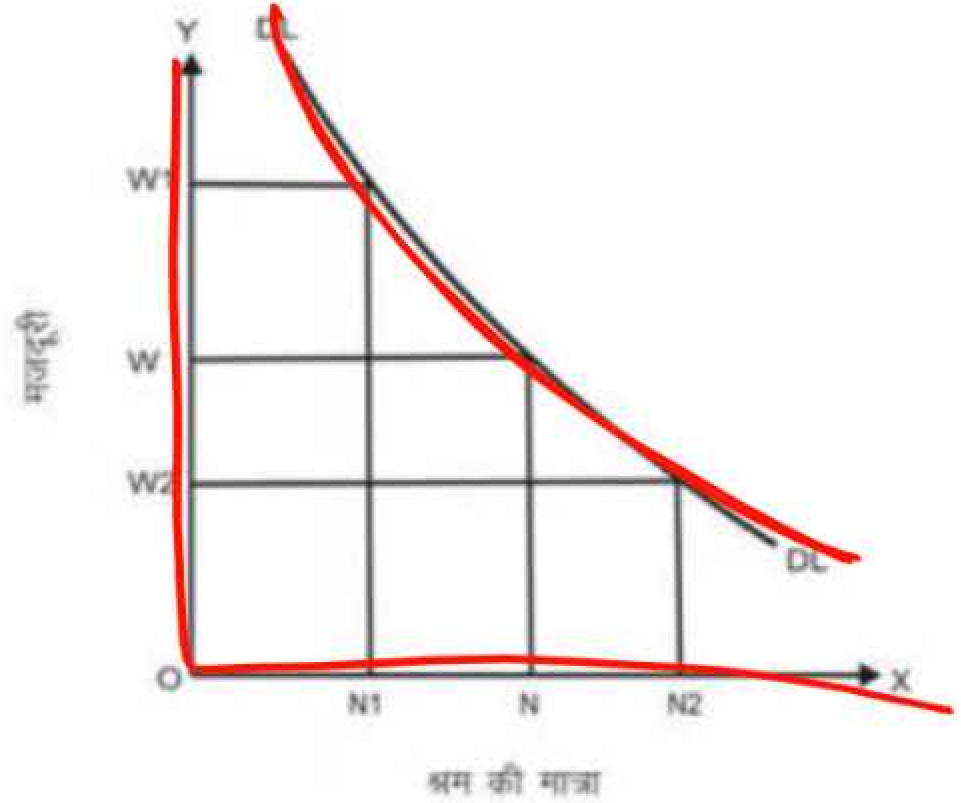

श्रम की माँग (Demand of Labour)

5. मजदूरी और श्रम की माँग का संबंध

श्रम की माँग और मजदूरी का **उल्टा** (Inverse) **संबंध** होता है:

उच्च मजदूरी → श्रम की माँग कम

कम मजदूरी → श्रम की माँग अधिक

इसलिए माँग वक्र नीचे की ओर ढलता है।

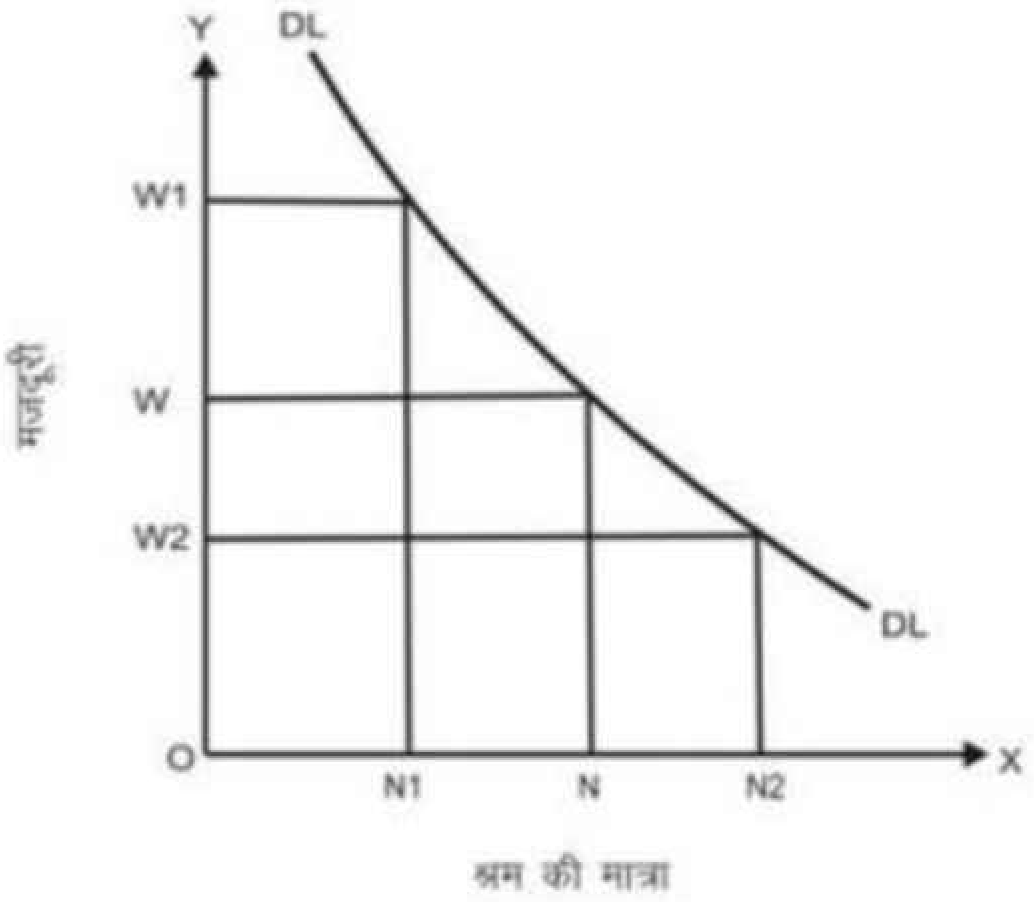

Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

मजदूरी निर्धारण: माँग-पूर्ति संतुलन
(Wage Determination: Demand–Supply Equilibrium)*

किसी भी उदयोग में मजदूरी का निर्धारण उस बिंदु पर होता है **जहाँ श्रम की माँग और श्रम की पूर्ति बराबर हो जाती है।**

इस बिंदु को **संतुलन बिंदु** **(Equilibrium Point)** कहते हैं।

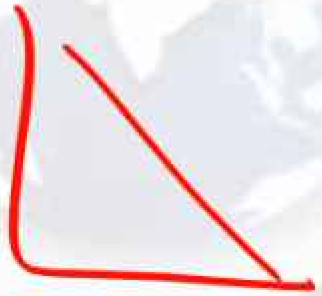

- **माँग वक्र = श्रम का MRP वक्र**
- **पूर्ति वक्र = श्रमिक कितनी मजदूरी पर कितने घंटे काम करेंगे**

जहाँ ये दोनों वक्र एक-दूसरे को काटते हैं, वहीं **संतुलन मजदूरी** **(OW)** बनती है और **संतुलन श्रम मात्रा** **(ON)** तय होती है।

मजदूरी निर्धारण: माँग-पूर्ति संतुलन
(Wage Determination: Demand–Supply Equilibrium)*

10 > 5

1. यदि मजदूरी संतुलन से अधिक हो (OW_1)

मजदूरी दर = OW_1

इस मजदूरी पर श्रम की पूर्ति = bW_1

श्रम की माँग = aW_1

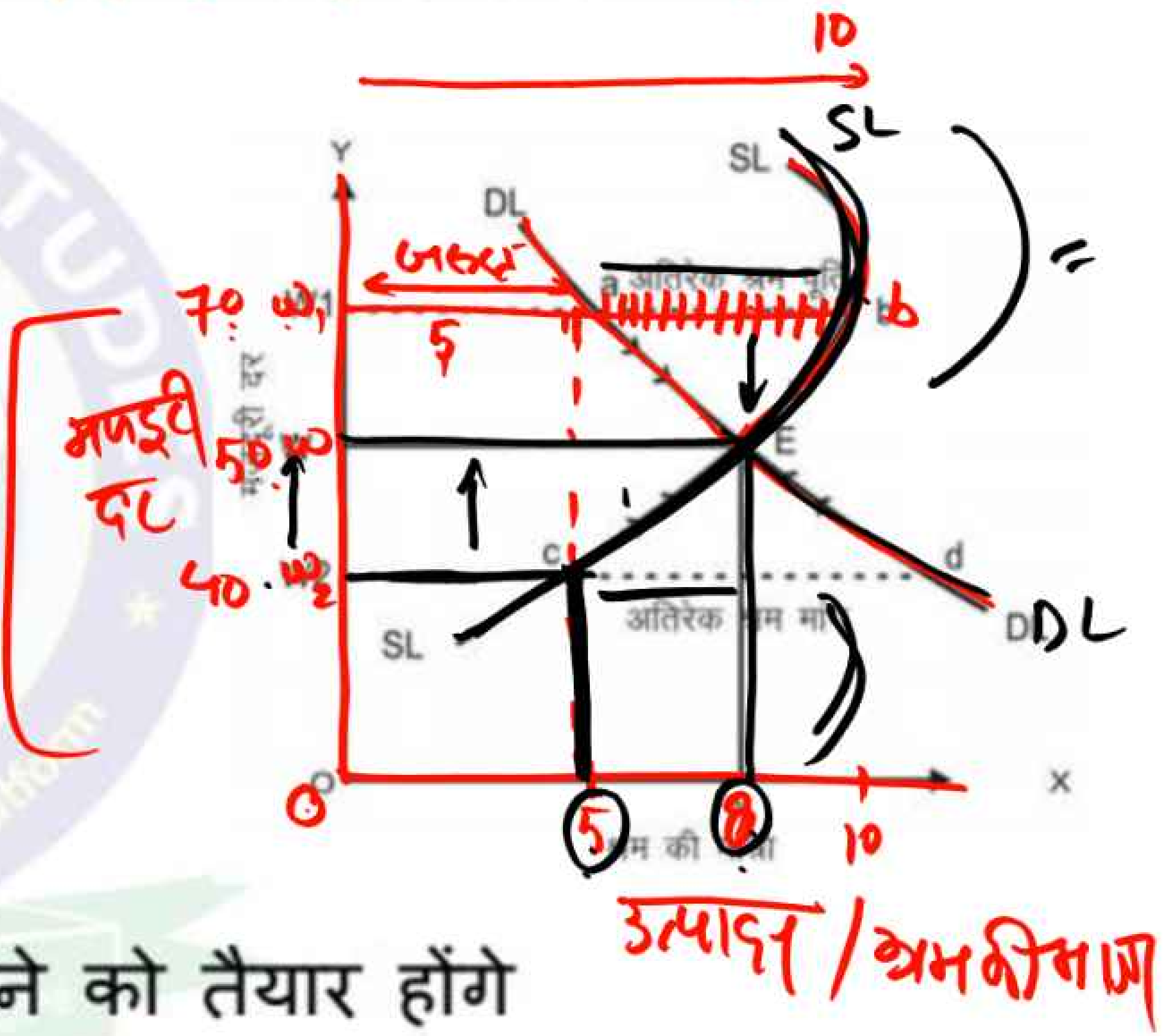

इसका मतलब:

पूर्ति > माँग → श्रम की अधिकता (Surplus Labour)

→ बेरोज़गारी उत्पन्न होगी।

जब बेरोजगार श्रमिक अधिक हो जाएंगे तो:

वे नौकरी पाने के लिए कम मजदूरी पर भी काम करने को तैयार होंगे

मजदूरी दर **घटने लगेगी**

यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक मजदूरी वापस **संतुलन बिंदु** E (OW) तक नहीं आ जाती।

मजदूरी निर्धारण: माँग-पूर्ति संतुलन
(Wage Determination: Demand–Supply Equilibrium)*

2. यदि मजदूरी संतुलन से कम हो (OW_2)

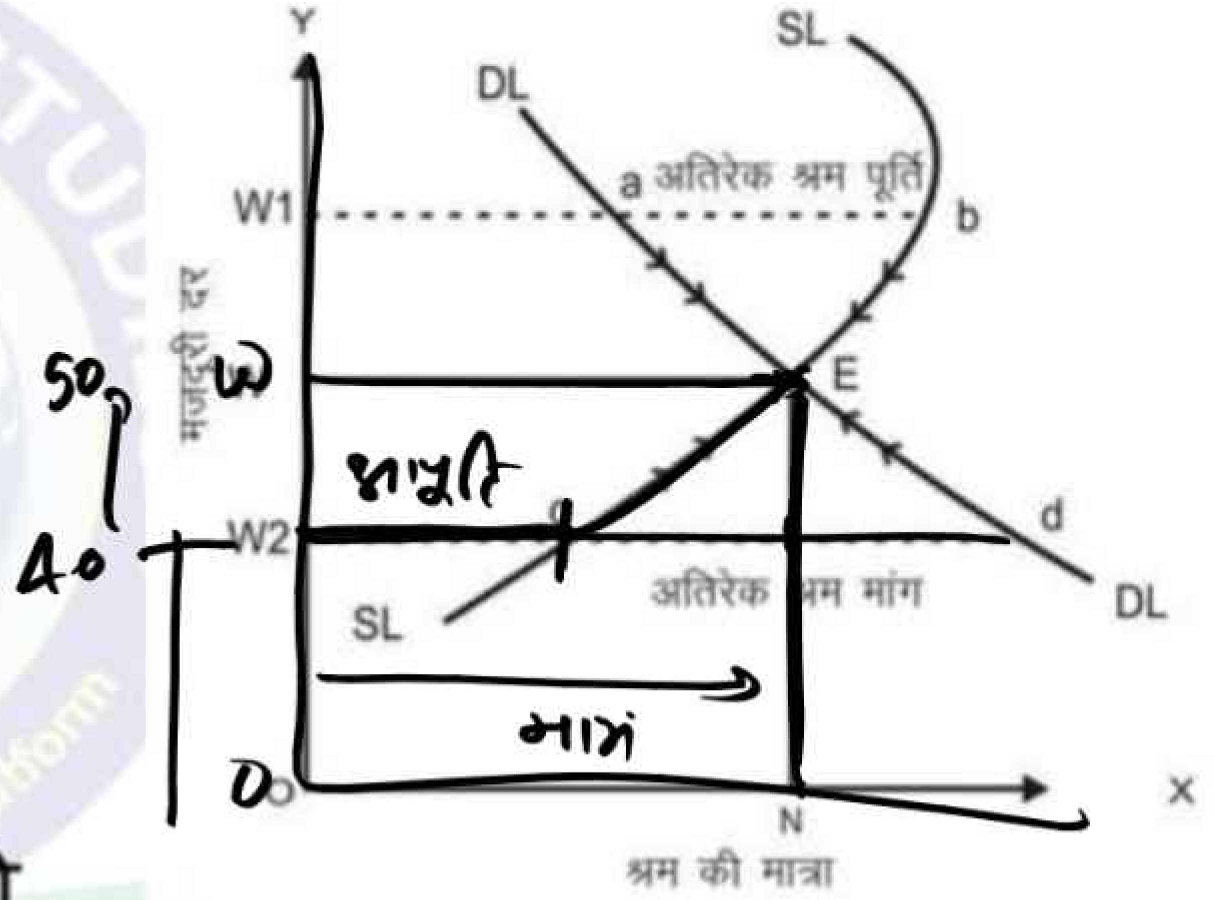

मजदूरी दर = OW_2
इस मजदूरी पर श्रम की पूर्ति = cW_2
श्रम की माँग = dW_2
इसका मतलब:
माँग > पूर्ति → श्रम की कमी (Labour Shortage)
ऐसे में:
कंपनियाँ अधिक मजदूर पाने के लिए मजदूरी बढ़ाएँगी
मजदूरी दर ऊपर बढ़ती जाएगी
यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक मजदूरी वापस **संतुलन बिंदु** E (OW) पर नहीं पहुँच जाती।

पूर्ण प्रतियोगिता में दी हुई मजदूरी के अंतर्गत एक फर्म का संतुलन

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) में एक महत्वपूर्ण बात होती है:

एक फर्म मजदूरी दर को बदल नहीं सकती।

वह मजदूरी को "मानकर" चलती है, उसे बाजार द्वारा तय मजदूरी पर ही मजदूर रखने पड़ते हैं।

इसलिए—

मजदूरी दर **फर्म के लिए स्थिर** (constant) होती है

फर्म की मजदूरी-रेखा **क्षैतिज** (horizontal) होती है

इसे **पूरी तरह लोचदार** (Perfectly Elastic) मजदूरी रेखा कहते हैं

इस मजदूरी रेखा को **AW = MW** से दर्शाया गया है।

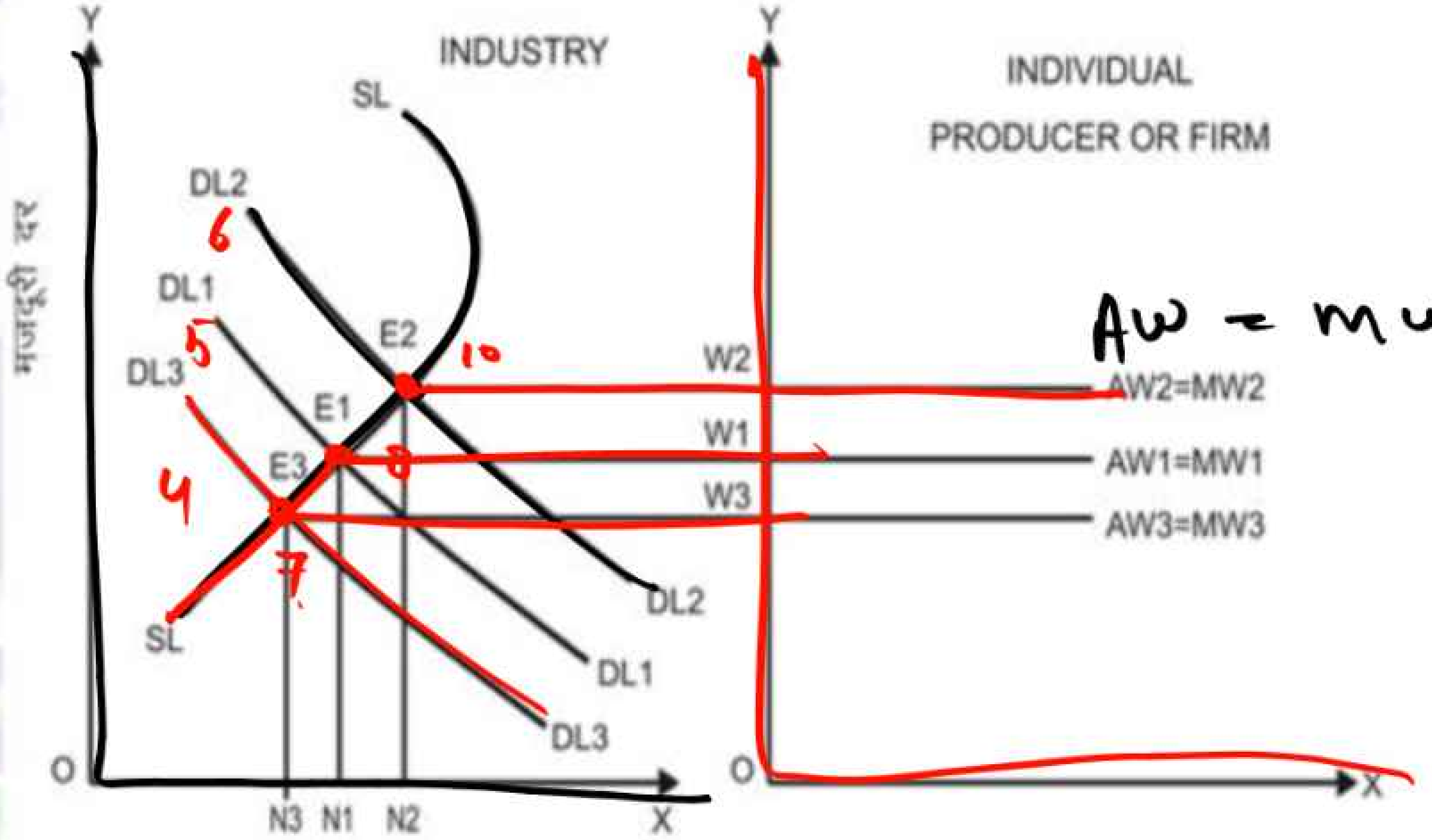

व्यक्तिगत उत्पादक के लिए पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी

उद्योग और फर्म के बीच संबंध

उद्योग में **श्रम की माँग और पूर्ति** के आधार पर मजदूरी तय होती है

इस मजदूरी को उद्योग की सभी फर्में "मिली हुई मजदूरी" की तरह मान लेती हैं

उदाहरण:

यदि उद्योग में संतुलन मजदूरी = OW_1

→ फर्म के लिए मजदूरी रेखा = $AW_1 = MW_1$

यदि मजदूरी = OW_2

→ फर्म के लिए मजदूरी रेखा = $AW_2 = MW_2$

यदि मजदूरी = OW_3

→ फर्म के लिए मजदूरी रेखा = $AW_3 = MW_3$

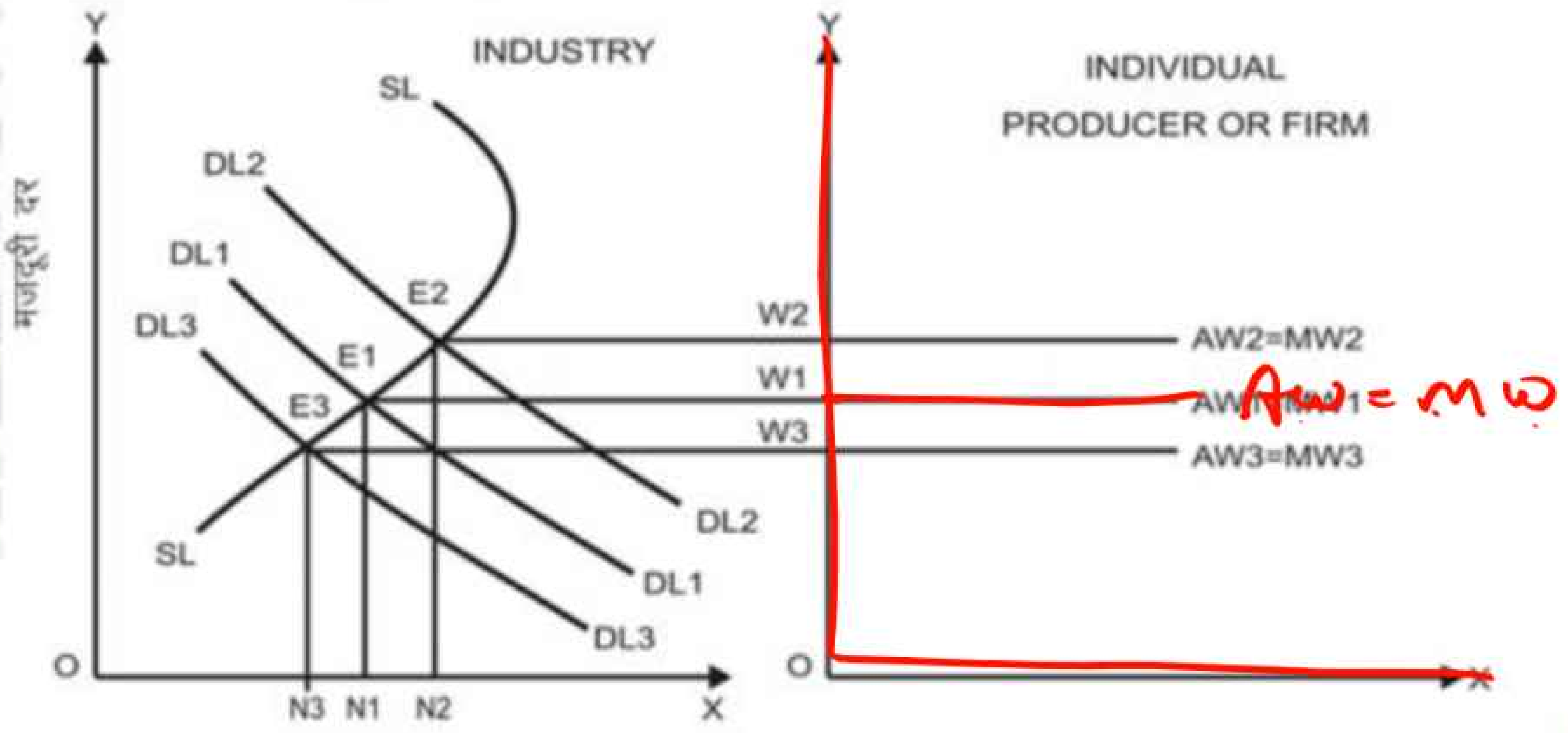

व्यक्तिगत उत्पादक के लिए पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी

फर्म का संतुलन कैसे तय होता है?

फर्म मजदूरों को तब तक रखती है जब तक:

MRP = MW

(सीमांत राजस्व उत्पाद = सीमांत मजदूरी)

यही **संतुलन की शर्त** है।

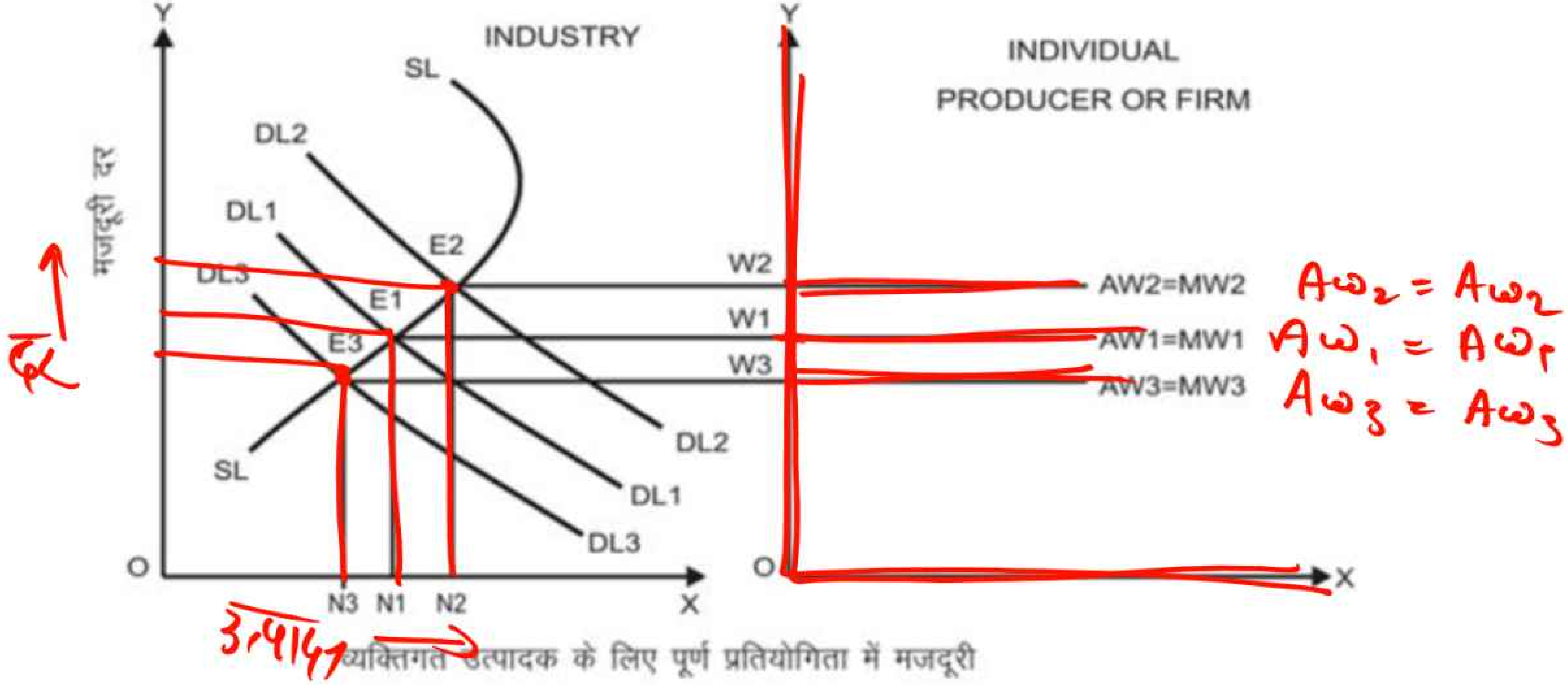

व्यक्तिगत उत्पादक के लिए पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी

1. यदि MRP > MW हो

→ हर नया मजदूर फर्म को अधिक लाभ देगा

→ फर्म *और मजदूर* रखेगी

→ जब तक कि MRP = MW न हो जाए

2. यदि MRP < MW हो

→ मजदूर का सीमांत उत्पादन उसकी मजदूरी से कम है

→ फर्म को नुकसान होगा

→ *फर्म मजदूर घटाएगी*

→ तब तक घटाएगी जब तक MRP = MW न हो जाए

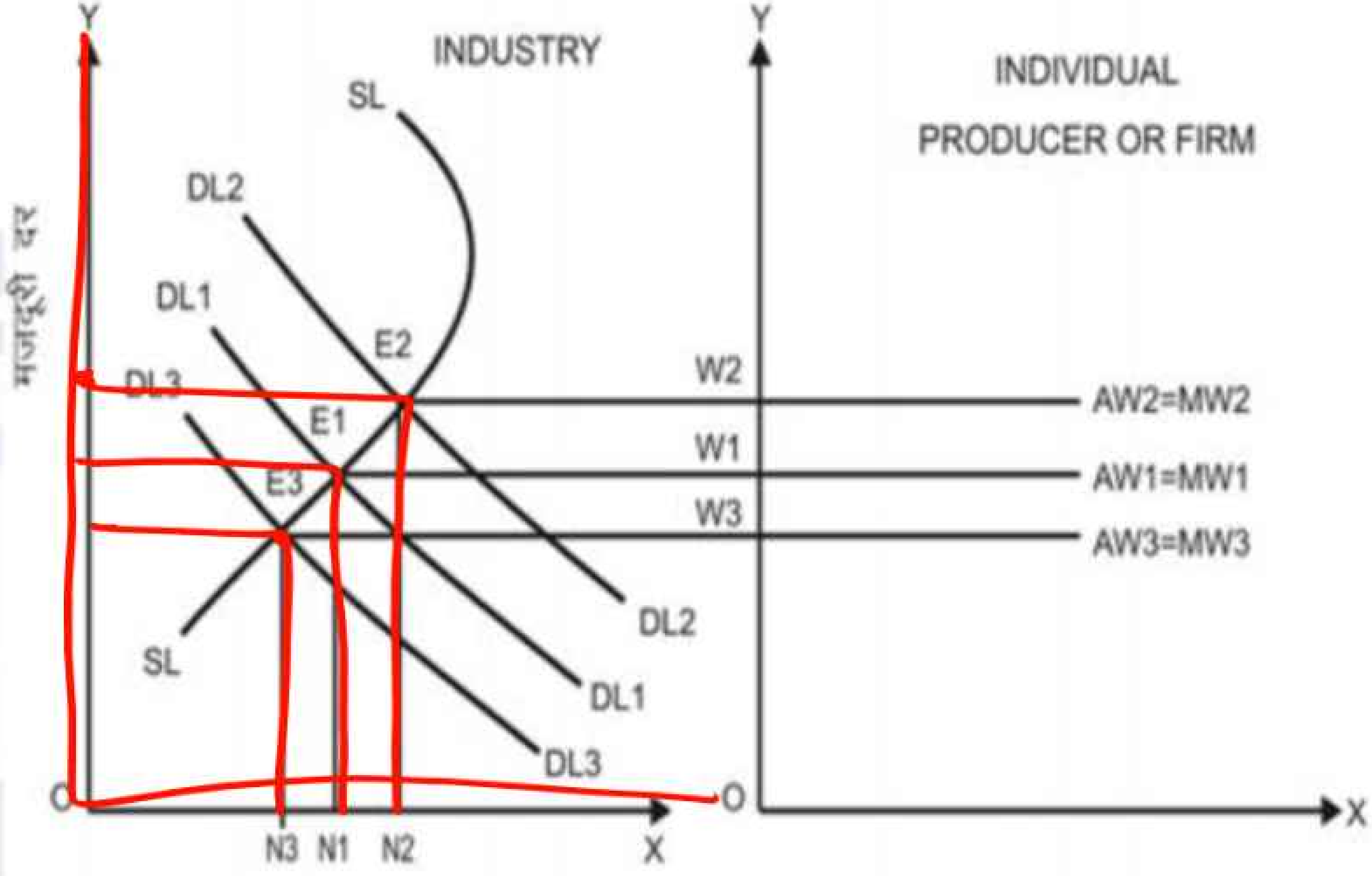

व्यक्तिगत उत्पादक के लिए पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी

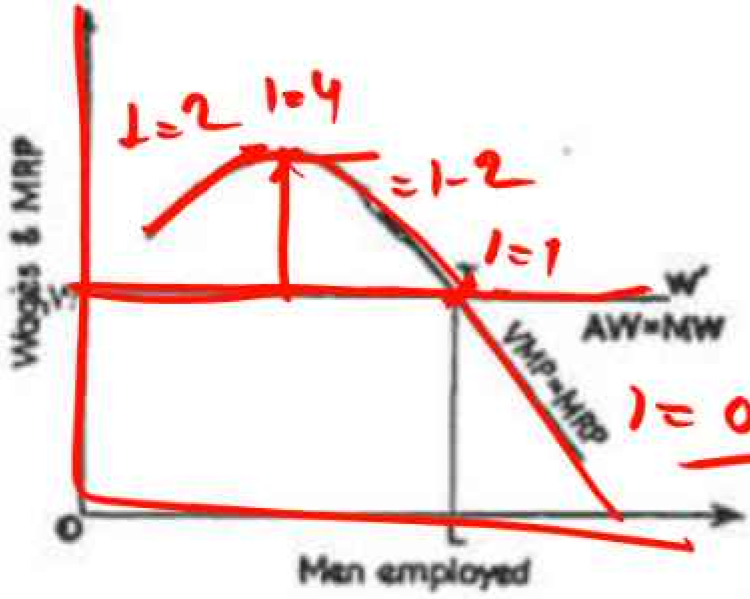

संतुलन बिंदु का अर्थ

फर्म का संतुलन वह बिंदु है जहाँ:
फर्म को न तो मजदूर बढ़ाने का लाभ है
न मजदूर घटाने से फायदा
इस बिंदु पर:

MRP = MW = AW

यही फर्म का श्रम उपयोग संतुलन है।

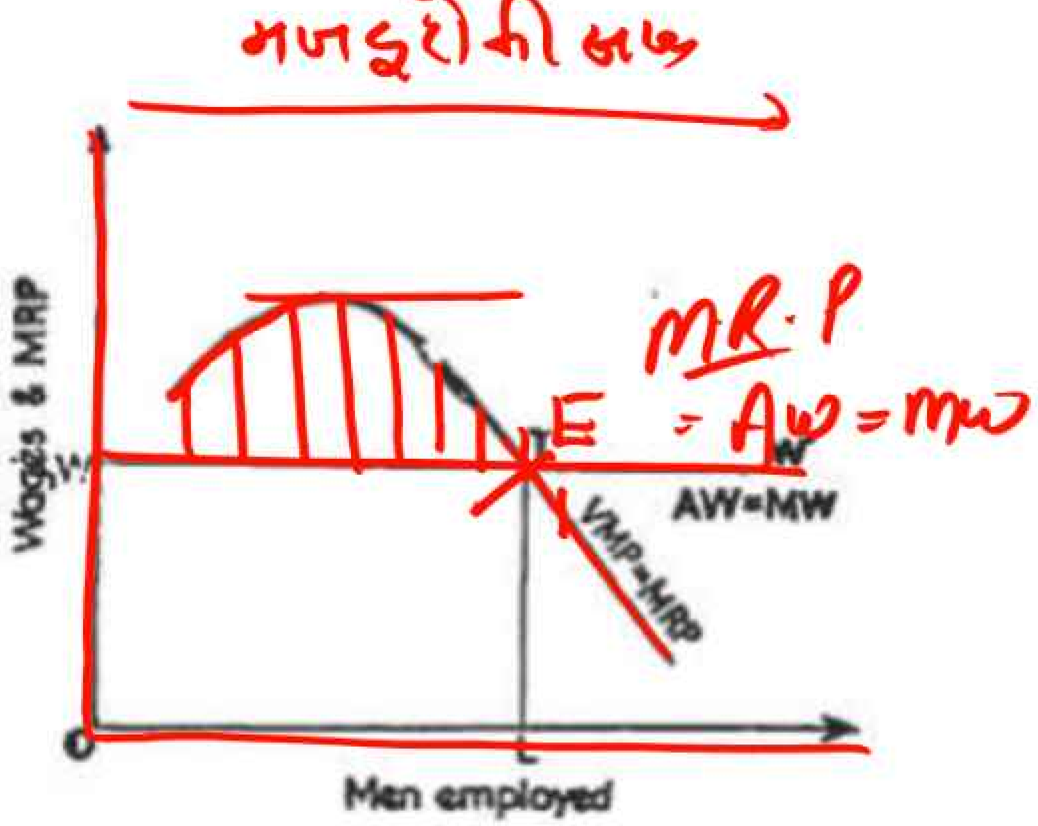

अल्पकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Short Run)

अल्पकाल (Short Run) में एक फर्म के लिए मजदूरी बाजार द्वारा तय रहती है।

इस तरह मजदूरी पर फर्म जब श्रमिक रखती है, तो उसे तीन तरह की स्थितियाँ मिल सकती हैं:

1.अल्पकालीन लाभ (Short-run Supernormal Profit)
2.अल्पकालीन सामान्य लाभ (Normal Profit)
3.अल्पकालीन हानि (Short-run Loss)

अल्पकाल में श्रमिकों का प्रयोग

(Use of Labour in Short Run)

अल्पकालीन लाभ (Short-Run Profit)

संतुलन बिंदु = **E**
मजदूरी दर = **OW**
श्रम की मात्रा = **ON**
इस बिंदु पर फर्म को प्रतिएकाई लाभ = **ER**
इसलिए फर्म को कुल लाभ मिलेगा = **ERSW क्षेत्र**
अल्पकाल में ऐसा लाभ इसलिए मिलता है क्योंकि:
मजदूरी स्थिर है
और फर्म का सीमांत राजस्व उत्पाद (MRP) अधिक होता है

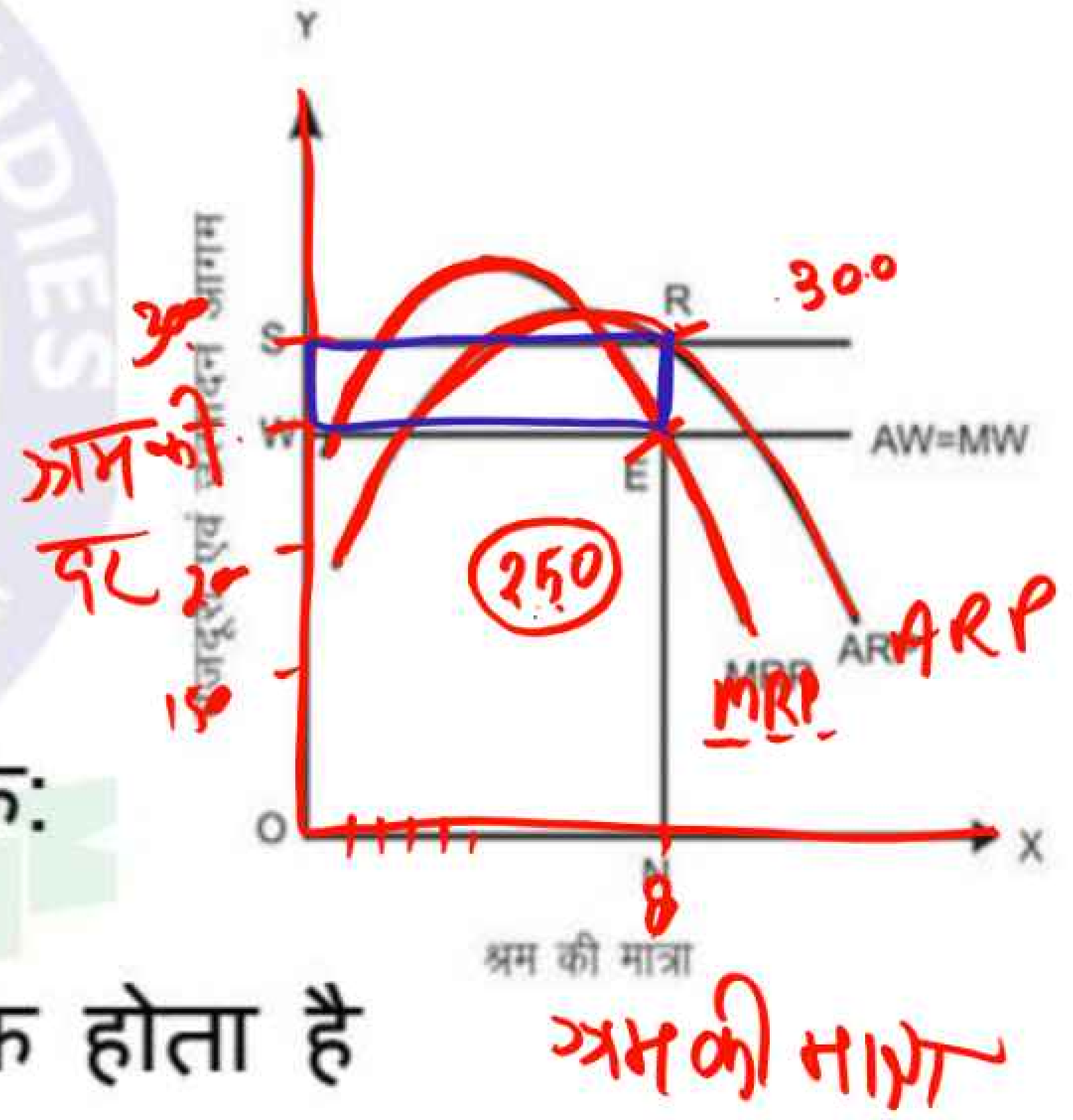

अल्पकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Short Run)

अल्पकालीन सामान्य लाभ (Normal Profit)

संतुलन बिंदु = E

यहाँ:

मजदूरी दर = OW

औसत मजदूरी (AW) = सीमांत मजदूरी (MW)

श्रम की मात्रा = ON

इस स्थिति में:

फर्म को न अतिरिक्त लाभ होता है

न कोई हानि होती है

सब कुछ सामान्य स्तर पर चलता है

यह *zero economic profit* जैसा होता है, लेकिन PDF के अनुसार केवल "सामान्य लाभ" की स्थिति है।

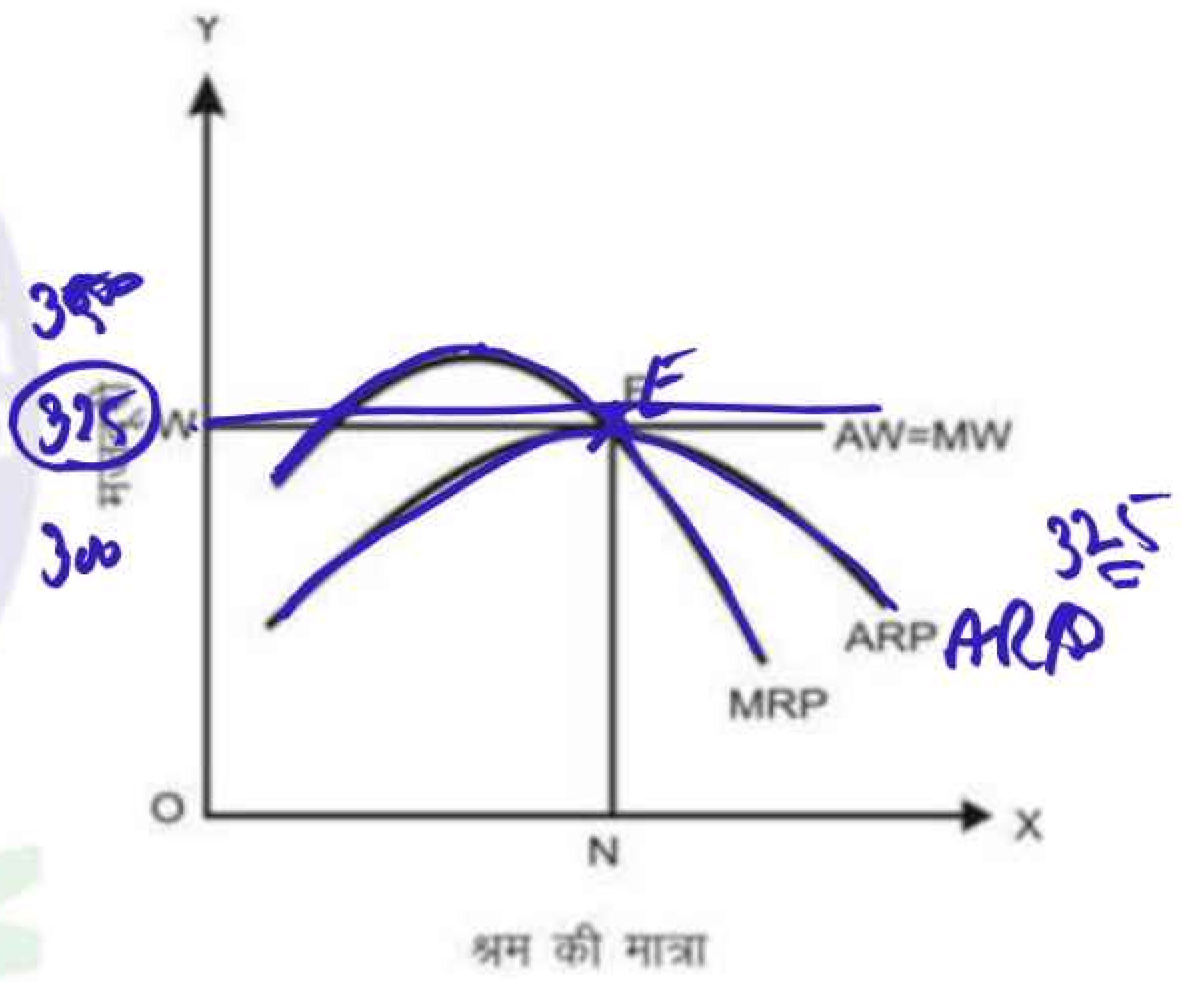

अल्पकाल में श्रमिकों का प्रयोग

(Use of Labour in Short Run)

अल्पकालीन हानि (Short-Run Loss)

संतुलन फिर से **E** बिंदु पर है, लेकिन:

मजदूरी दर = **OW**

श्रम की मात्रा = **ON**

प्रतिएकाई हानि = **ER**

इस स्थिति में फर्म को कुल **हानि = WERS क्षेत्र**

ऐसा तब होता है जब:

फर्म का सीमांत राजस्व उत्पाद (MRP)

→ मजदूरी (MW) से कम हो जाता है

यानी हर नया श्रमिक फर्म को नुकसान देता है

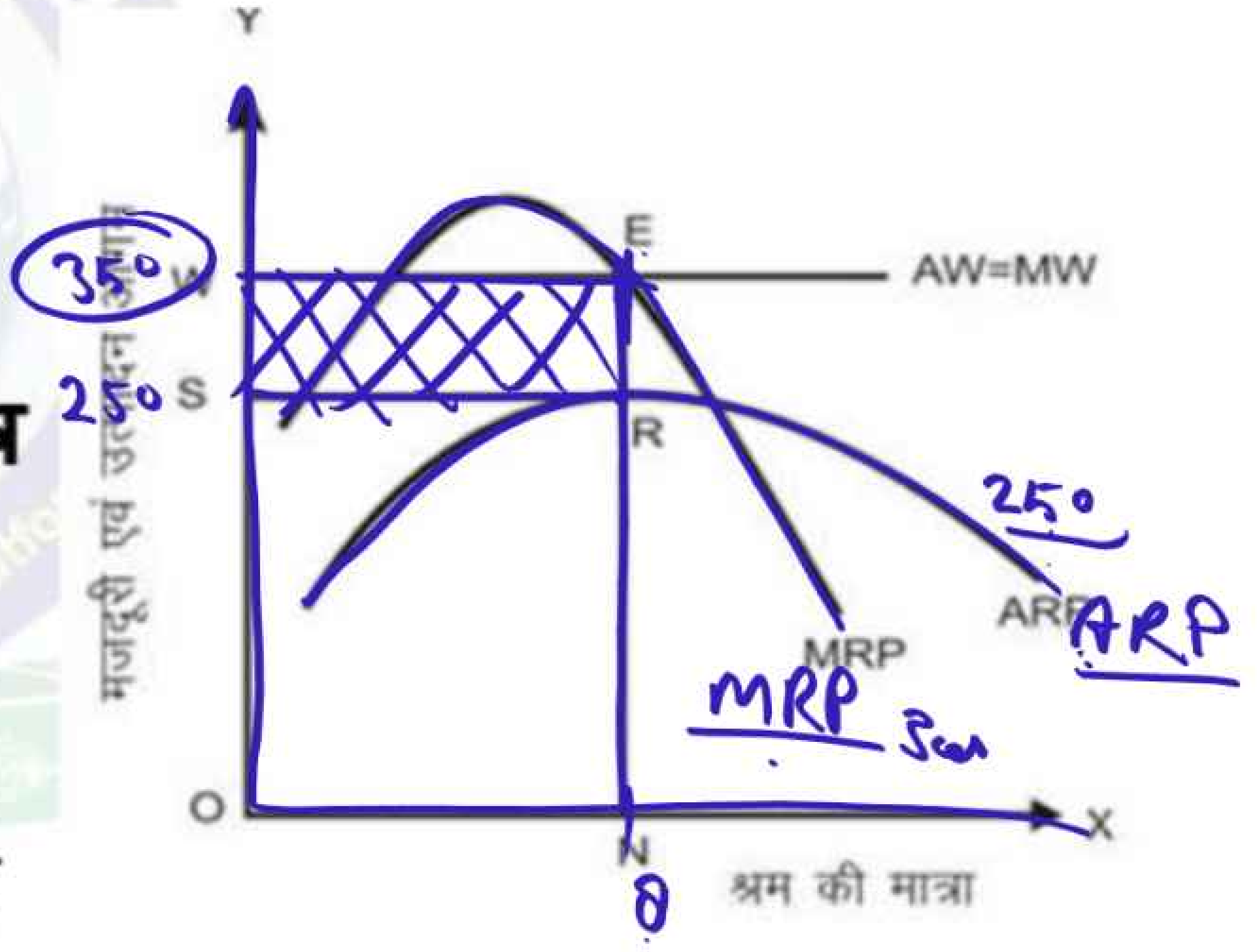

दीर्घकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Long Run)

दीर्घकाल का अर्थ है **वह समय अवधि जिसमें उद्योग में नई फर्में प्रवेश कर सकती हैं या पुरानी फर्में उद्योग छोड़ सकती हैं**। इस काल में सभी कारक (श्रम, पूँजी आदि) परिवर्तनीय होते हैं।

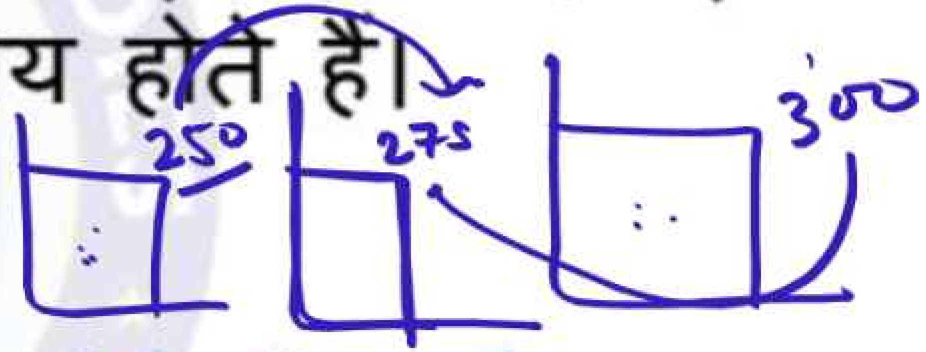

1. दीर्घकाल में लाभ की स्थिति

- **पूर्ण प्रतियोगिता** की स्थिति में दीर्घकाल में कोई भी फर्म **असामान्य (अतिरिक्त) लाभ** नहीं कमाती।
- सभी फर्मों को केवल **सामान्य लाभ (Normal Profit)** ही प्राप्त होता है।

दीर्घकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Long Run)

2. यदि फर्म को असामान्य लाभ मिलता है तो क्या होगा?

•असामान्य लाभ देखकर **नई फर्में उद्योग में प्रवेश** करती हैं।

•नई फर्मों के आने से:

- **श्रम की माँग बढ़ती है**, इसलिए **मजदूरी (AW) बढ़ जाती है।**
- उत्पादन बढ़ने से **औसत राजस्व उत्पादकता (ARP) घटने लगती है।**

•परिणाम: कुछ समय बाद स्थिति बनती है

👉 **ARP = AW**

और असामान्य लाभ समाप्त होकर केवल सामान्य लाभ रह जाता है।

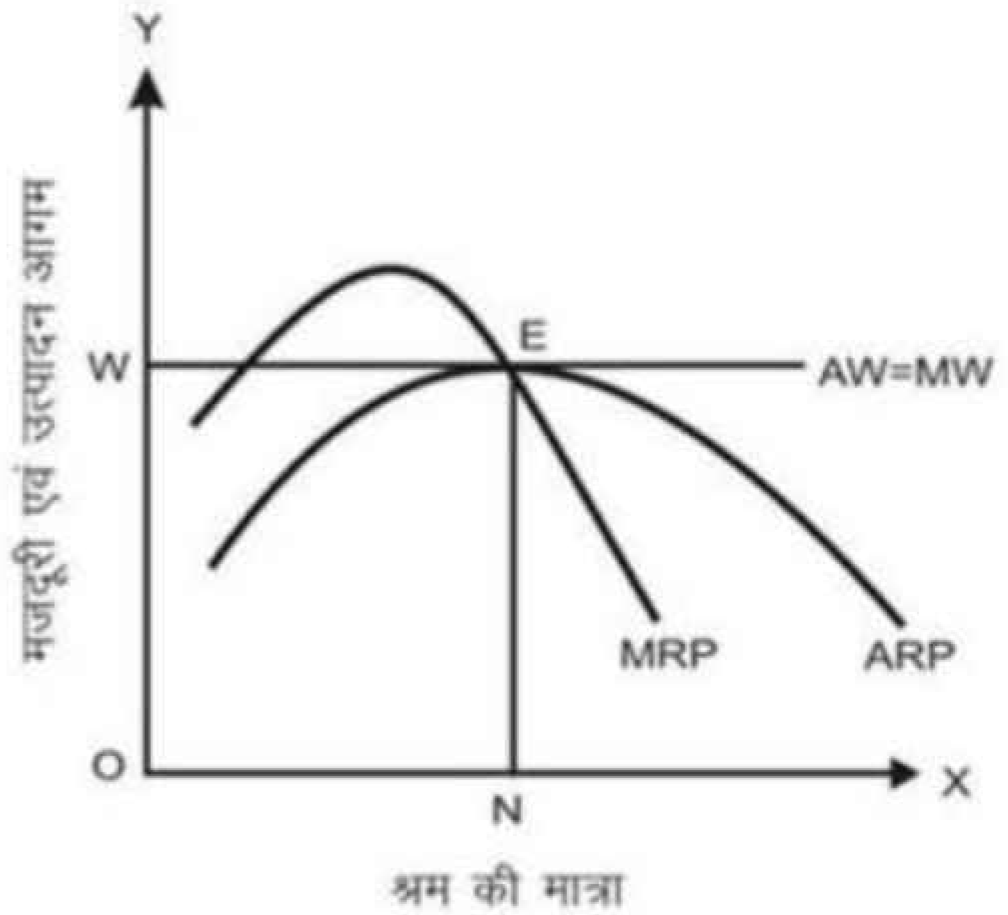

दीर्घकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Long Run)

3. यदि फर्म को हानि हो रही हो तो क्या होगा?

हानि होने पर **कुछ फर्में उद्योग छोड़ देती हैं।**

इससे:

श्रम की माँग घटती है, इसलिए **मजदूरी (AW) घट जाती है।**

उत्पादन घटने से **ARP बढ़ने लगता है।**

अंततः फिर से स्थिति बनती है

👉 **ARP = AW**

और फर्म हानि से निकलकर **सामान्य लाभ** की स्थिति में आ जाती है।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

दीर्घकाल में श्रमिकों का प्रयोग
(Use of Labour in Long Run)

4. दीर्घकालीन संतुलन (Long Run Equilibrium)

दीर्घकाल में फर्म का संतुलन तब होता है जब:

- **AW = MW = ARP = MRP**
- मजदूरी दर दी हुई होती है।
- श्रमिकों का प्रयोग उस स्तर तक किया जाता है जहाँ **सीमान्त राजस्व उत्पाद (MRP) = सीमान्त मजदूरी (MW)** हो।

लाभ का आधुनिक सिद्धान्त
(Modern Theory of Profit)

आधुनिक अर्थशास्त्र में लाभ को **स्थायी आय** नहीं माना जाता, बल्कि इसे

- **अस्थायी** (Temporary) एवं
- **विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाला अतिरिक्त लाभ** माना जाता है।

इस दृष्टिकोण को सबसे प्रभावशाली रूप से **प्रो. शुम्पीटर** (Schumpeter) ने समझाया।

(A) शुम्पीटर का नवप्रवर्तन सिद्धान्त (Innovation Theory of Profit)

शुम्पीटर का मूल विचार-

प्रो. शुम्पीटर के अनुसार – **"लाभ नवप्रवर्तन का प्रतिफल (Reward of Innovation) है।"**

अर्थात्

- ✅ लाभ न तो जोखिम का प्रतिफल है
- ✅ न ही प्रबंधन का वेतन
- ✅ बल्कि **नवप्रवर्तन (Innovation)** से उत्पन्न होता है

नवप्रवर्तन (Innovation) क्या है?

नवप्रवर्तन का अर्थ केवल *नई खोज* नहीं है, बल्कि **उत्पादन या बाजार में कोई प्रभावशाली नया परिवर्तन** करना है।

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

THANKS FOR WATCHING